ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 191-194

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

उत्तराखण्ड पर्यटनः अतीत और वर्तमान

डॉ0 चंद्रकेश कुमार E-mail: kchandrakesh 98@gmail.com

Received- 11.02.2021, Revised- 14.02.2021, Accepted - 19.02.2021

सारांश : ***प्राचीन सभ्यताओं वाला देश भारत है। यहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति प्राचीन काल से ही समृद्ध रही है। यहाँ पर सभी धर्मों, जातियों, वर्गों, राष्ट्रों व विभिन्न भाषा बोलने वाले लोग एक साथ रहते है। जो एकता एवं शान्ति का प्रतीक है, हमारे देश में संसार की झलक देखी जा सकती हमारे देश में है। इसी लिए शुरू से ही भारत विदेशी व देशी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है। " अतिथि देवो भवः" की परम्परा पुरानी है।' (रही बात उत्तराखण्ड की तो, उत्तराखण्ड भारत की 27 राज्यों में से एक महत्वपूर्ण राज्य है। उत्तराखण्ड राज्य को "देव भूमि" के नाम से जाना जाता है। इसका कारण है कि यहाँ वैद्धिक संस्कृति के कुछ महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान है। उत्तराखण्ड के लगभग हर कोने में किसी ना किसी देवता या देवी का मन्दिर है।)***

प्रकृति अपने साथ न जाने कहाँ कौन सी खुसबू बिखेर दे कहा नहीं जा सकता और उसी खुसबू के कारण यह स्थान दर्शनीय व भ्रमण योग्य हो जाता है कुछ ऐसा ही प्रदेश हैं उत्तराखंड । अगर आप अपने परिवार के साथ पर्यटन का आनंद उठाना चाहते हैं तो उत्तराचंल से बेहतर सायद ही कोई जगह होगी।दूनिया भर में पर्यटन रोजगार पैदा करने वाले एक क्षेत्र के रूप में जाना जाता हैं, साथ ही विदेशी मुद्रा लाने और आथिर्क विकास को वढावा के लिए भी जाना जाता हैं। विशिष्ट संस्कृति से परिपूर्ण, प्राकृतिक, विविधता, विरासत, जीवंत बाजार और पारंम्परिक आतिथ्य भाव वाले उत्तराखण्ड मे प्रचुर सम्भावनाएं हैं। जरूरत इस बात कि हैं कि इसे उपभोक्ता तक कायदे से प्रस्तुत किया जाय,जिससे उत्तराखण्ड के पर्यटन का भविष्य उज्ज्वल वना रहे।

कुंजीभूत शब्द– धर्मों, जातियों, वर्गों, राष्ट्रों, रोजगार, पर्यटन, भ्रमण।

पौराणिक आख्यानो में औली (उत्तराखण्ड) इसकी समीपवर्ती पर्वतीय चोटियों का उल्लेख है। राम–रावण युद्ध में मेघनाथ की अमोघ शक्ति से अचेत लक्ष्मण की प्राण रक्षा हेतु संजीवनी बूटी भी इसी क्षेत्र से लायी गयी थी। द्रोणागिरी शिखर औली के पास ही की पर्वत चोटी है। जहाँ से हनुमान जी संजीवनी बूटी लेकर लंका गये थे।' इस राज्य में भारत के सबसे प्रमुख नगरों में से एक हरिद्वार में प्रतिवर्ष लाखों पर्यटक आते रहे ।

पर्यटन शब्द सुनते ही जेहन मे कौधती हैं हसीन वादियां अगर आप उंचे आसमान मे पक्षियों की तरह उड़ना चाहते है, बरफीले पहाड़ों के बीच वफ के साथ खेलना चाहते हैं तो उत्तराखण्ड में ऐसे बहुत से पर्यटन स्थल है जहाँ पर जा कर स्कीइंग, टैकिंग,वाटर राफ्टिंग आदि का लुत्फ उठाया जा सकता हैं।

हरिद्वार के निकट स्थित ऋषिकेश भारत कें योग का प्रमुख स्थल जो हरिद्वार के साथ मिलकर एक पवित्र हिन्दू तीर्थ स्थल है केदानाथ, गंगोत्री, ब्रदीनाथ यमनोत्री, दूनागिरी व रानीखेत, देहरादून हिल स्टेशनों, बर्फीली, जगहों पर देश विदेश से लाखों श्रद्धालू आते है रहे है। प्रकृत अपने साथ न जाने कहाँ कौन सी खुशबू विखेर दे कहा नहीं जा सकता और उसी खुशबू के कारण वह स्थान दर्शनीय व भ्रमण योग्य हो जाता है। कुछ ऐसा ही प्रदेश है उत्तरांचल। यहाँ आप प्रकृत के अदभूत रंगो को बहुत नजदीक से देख सकते है। एक तरफ गंगा की कलकल करती जलधारा आप को अपनी ओर खीचने का प्रयास करेगी, तो दूसरी ओर मन्दिर व देव स्थलों की घंटों की मधूर ध्वनि आप के कानों को एक अनोखा सुकून देगी।

स्वतन्त्रता से पूर्व उत्तराचंल की धरती पर कत्यूरी चन्द्र गोरखा एवं अंग्रेज का शासन रहा, इसमें सर्वशक्तिशाली एवं चर्चित राजवंश कत्यूरियों का था जिन्होंने लम्बे समय तक राज किया । उन्ही कत्यूरी राजवंश के परमपराक्रमी राजाओं में से एक थे। पिथौरा जिन्होने नेपाल और अन्य सीमावर्ती क्षेत्रों के राजाओं को हराकर अपने साम्राज्य में मिला, लिया अपनी कुशलता साहस एवं वीरता के कारण ही इन्हें प्रीतम देव पृथ्वीशाही एवं राजाराय पिथौराशाही के नामों से जाना जाता था। इतिहासकार डॉ० मदनचन्द्र भट्ट के अनुसार– लोक प्रसिद्ध पिथौराशाही की पत्नी जियारानी ने रानीखेत व रानीबाग नगर को वसाए तथा नैनीताल के नैनादेवी मन्दिर की स्थापना भी इन्ही के करकमलो से की गयी। राजा पिथौरा ने अपने साम्राज्य को शक्तिशाली बनाने के लिए अनेक किले सुरक्षा उपकरण को बनवाएं। इनमें पृथ्वीगढ नामक किला प्रमुख था, जो नगर के उत्तरी छोर में वर्तमान राजकीयबालिका इण्टर कालेज जी०जी०आई०सी० के स्थान पर था।

जमीन की सतह से 20 मीटर उचाई पर, निर्मित इस किले के भीतर नीन मंजीले भवन का भी निर्माण कराया गया था। यही किलां कालान्तर में पिथौरागढ के नाम से प्रसिद्ध हुआ तथा इसी किले के नाम पर पिथौरागढ जनपद का उदभव हुआ।

कत्यूरी वंश का अंतिम पराक्रमी शासक वीरदेव को माना जाता है जिन्होंने अपने शासनकाल

एसोसिएट प्रोफेसर– अर्थशास्त्र विभाग, बी.बी.डी.पी.जी. कॉलेज परइया आशाराम, अम्बेडकर नगर (उ0प्र0), भारत

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

में आमजन को तरह–2 के करो से लादकर जनता पर अत्याचार किए, इसी कारण इनके सेवको ने ही इनकी हत्याकर कर दी। वीरदेव के वाद कत्यूरी राजवंश छिन्न– भिन्न हो गया।

तत्पश्चात छोटे–छोटे राज्यों को चन्दवंशी राजाओं ने एक छत्र राज्य में सम्मिलित कर स्थायी नींव डाली। बद्रीदन्त पाण्डेय के अनुसार– चन्दवंशी राजाओं के काशीपुर पुश्तनामे से मिलान करने पर ज्ञात होता है कि चन्दवंश प्रथम राजा सोमचन्द के गद्दी पर बैठने की तिथि : 700–721 ई० मालूम पडती है। कुछ इतिहास कार चिद्यान शासन का प्रारम्भ 953 ई0 से तो कुछ 1261 ई0 से मानते है। चन्दवंश के लम्बे शासन करने के बाद अनेक उतार चढाव के पश्चात् 30 जनवरी 1790ई0 को राजामोहन चन्द गोरखाओं से परास्त हो गये तथा चन्द्रवंशी राजाओं का अधिकार जाता रहा। इसेक उपरान्त गोरखो ने इसी वर्ष सम्पूर्ण उत्तराखण्ड पर अपना आधिपत्य कर लिया। उत्तराखण्ड पर्यटन का अतीत बहुत पुराना है तथा पर्यटन को उत्तराखण्ड के आर्थिक विकास के प्रमुख स्रोत के रूप में देखा जाता रहा है। बद्रीनाथ, 'केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री पंचकेदार आदि कैलाश, हरिद्वार, ऋषिकेश, हेमकुण्ड, रीठा साहिब, नानकमत्ता पीरान कालियर जैसे धर्मस्थलों के कारण यहाँ आदि काल से धार्मिक पर्यटन होता रहा है।

उत्तराखण्ड राज्य 9 नवम्बर 2000 को भारत गणराज्य के 27वें राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। उत्तराखण्ड हिमालय की तलहटी में स्थित है और राज्य नेपाल एवं तिब्बत के साथ अर्न्तराष्ट्रीय सीमाओं ककको साझा करता है। यह भारत के तीव्रता से विकसित होने वालों राज्यों में से एक राज्य है। उत्तराखण्ड राज्य को वर्ष 2004 का पर्यटन का राष्ट्रीय पुरूस्कार भी मिला है उत्तराखण्ड पर्यटन विभाग के अनुसार वर्ष 2004 में यहा 6000 पर्य आये थे। इससे सरकार व पर्यटन विभाग खासे उत्साहित है। राज्य की जी०एस०डी०पी० (सकल राज्य घरेलू उत्पाद) में वित्तीय वर्ष 2012. 18 के दौरान 5.34 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि हुई है। राज्य का 70 प्रतिशत भू–भाग जंगलो से अच्छादित है जो कि हरियाली एवं पर्यावरण के प्रति महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राज्य में लगभग सभी प्रकार के कृषि जलवायु क्षेत्र परम्परागत और उच्च मूल्य के कृषि उत्पादों के लिए वाणिज्यिक अवसर प्रदान करते है पर्यटन राज्य की अर्थव्यवस्था का निःसंदेह एक महत्वपूर्ण सेक्टर है। पर्यटन से राज्य में 2006–2007 से 2016–17 तक कुल सकल राज्य घरेलू उत्पाद में न केवल 50 प्रतिशतयोगदान है वरन पर्यटन से राज्य के सभी क्षेत्रों, दूरस्थ क्षेत्रों सहित में भी लोगो को आजीविका के अवसर प्राप्त हुए है। जैसे कि राज्य अपनी परिकल्पना टपेपवद को प्राप्त करने के लिए हरित अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर हो रहा हैं, पर्यटन क्षेत्र राज्य में सामाजिक एवं आर्थिक लक्ष्यों को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। उत्तराखण्ड में पर्यटकों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। वर्ष 2006 में 19.45 लाख पर्यटक उत्तराखण्ड में आये। जिसकी संख्या वर्ष 2016 तक 31.78 लाख अंकित की गयी। राज्य में ब्।ळत् की दर 5.03 प्रतिशत दर्ज की गयी। हाल ही में विश्व टूरिज्म एवं ट्रेवेल कौंसिल (ज्ज्ब्) की रिपोर्ट में पूर्ण आकार के आधार पर भारत को वैश्विक स्तर पर 7वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उल्लेखित किया गया और 2017 से 2027 के मध्य इस क्षेत्र 7 प्रतिशत वृद्धिदर का अनुमान दिया गया है अनुमान है कि उत्तराखण्ड देश में बढ़ते हुए पर्यटन के रूझान से लाभान्वित होगा।

उत्तराखण्ड उत्तराखण्ड में पर्यटकों का आगमन और अनुमान (मिलियन में)

यदि हम इसे 2002 से 2017 तक के आकड़े को देखे तो राज्य में आनेवाले पर्यटकों की तादात में 196.57 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। 2002 में उत्तराखण्ड में आनेवाले पर्यटकों की संख्या 117. 08 लाख थी। साल 2017 में 343.23 लाख पर्यटक उत्तराखण्ड आये इनमें 1.4 लाख विदेशी पर्यटक शामिल थे 2010 से 2014 के बीच पर्यटकों की तादात में कमी आयी क्योंकि 2013 की उत्तराखण्ड आपदा के कारण पर्यटकों का यह ग्राफ तेजी से गिरा। इसके बावजूद अगले सालों में पर्यटकों की आवागमन बढ़ने लगी और हर साल बढ़ती जा रही है। यह आकड़ा उत्तराखण्ड में पर्यटन की सम्भावनाओं को दिखाता है।

उत्तराखण्ड में पर्यटकों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। वर्ष 2006 में 19.45 लाख पर्यटक उत्तराखण्ड में आये जिनकी संख्या वर्ष 2016 तक 31.78 लाख अंकित की गयी। राज्य में CAGR की दर 5.03 प्रतिशत दर्ज की गयी। हाल ही में विश्व टूरिजम एण्ड ट्रैवेल कौसिल। (WTTC) की रिपोर्ट में पूर्ण आकार के आधार पर भारत को वैश्विक स्तर पर 7वी सबसे बड़ी पर्यटन अर्थव्यवस्था के रूप में उल्लिखित किया गया और 2017 से 2027 के मध्य इस क्षेत्र में 7 प्रतिशत वृद्धि का अनुमान दिया गया अपेक्षित है कि उत्तराखण्ड, देश में बढते हुए पर्यटन के रूझान से लाभाविन्त होगा। वर्ष 2020 मं ब्व्टप्क – 19 के कारण लॉकडाउन से अब तक उत्तराखण्ड का पर्यटन ग्राफ सबसे निचले स्तर पर पहुँच गया है। इसकी बजह से सबसे ज्यादा वो लोग प्रभावित हुए हैं जिनका घर उत्तराखण्ड के पर्यटन व्यवसाय से चलता था। आज भी ऐसे लोग दो वक्त की रोजी–रोटी के विभिन्न प्रयास कर रहे है। अफसोस की बात ये है कि सरकार की तरफ इनको आश्वासन के अतरिक्त कुछ भी प्राप्त नहीं हो रहा है। उत्तराखण्ड में पर्यटकों की अपार सम्भावना है प्रदेश में तरह–तरह के ऐसे

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

पर्यटक स्थल है जहाँ दिन प्रतिदिन हजारों की संख्या में पर्यटक पहुँचते है। भारी संख्या में पर्यटकों का उत्तराखण्ड में जमावडा रहता है। पर्यटकों के कारण उत्तराखण्ड के कई पर्यटन व्यवसायियों का रोटी–रोजी चलती है लेकिन 2020 में COVID– 19 वैश्विक महामारी कोरोना संक्रमण के दस्तक के बाद परिस्थितियाँ पूरी तरह से छिन्न– भिन्न हो गयी। संक्रमण से बचाव के लिए लागू लॉकडाउन के चलते पर्यटन गतिविधियाँ पूरी तरह से थमगई हालांकि, आनलाक के दौरान पर्यटन हालात धीरे–धीरे तो शुरू हुई। लेकिन बची– खुची कसर कोरोना संक्रमण इस दूसरी लहर निकाल दी है।

साल 2020 में जब आनलॉक के दौरान राज्य सरकार ने पर्यटन गतिविधियों को आगे बढ़ाने पर बल दिया। जिनका निष्कर्ष यह रहा कि एकबार पुनः दुबारा पर्यटकों के आने का सिलसिला शुरू हुआ। हालांकि राज्य सरकार के कोरोना नियमों के कारण पर्यटकों के संख्या सीमित रही। बावजूद इसके हजारों की संख्या में पर्यटकों ने उत्तराखण्ड की तरफ अपना रूख किया। इसके अतिरिक्त चारधाम के दर्शन के लिए भी श्रद्धालु उत्तराखण्ड पहुँचे। लेकिन कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर की दस्तक के बाद फिर परिस्थितियाँ पिछले साल की तरह बन गयी हैं मौजूदा वक्त में पिछेल साल की तरह ही पर्यटन गतिविधियाँ पूरी तरह से ठप हो गई है।

प्रदेश में मुख्य रूप से धार्मिक स्थल, चारधाम, हेमकुण्ड, साहिब, हरिद्वार, ऋषिकेश, नानकमत्ता और पिनार कलियर है जहाँ हर वर्ष लाखों की संख्या में पर्यटक पहुँचते है इसके साथ ही तमाम पर्यटक स्थल ऐसे भी है, जहाँ पर्यटक उत्तराखण्ड की खूबसूरत एवं शान्त वादियों को आनन्द उठाते है जैसे–' मसूरी, धनौल्टी, नैनीताल, फूलो की घाटी, औली, लैसडाउन, तिहरी झील, चोपता, चकराता, सहस्त्रधारा यही नही वन्यजीव प्रेमी कार्बेट नेशनल पार्क, राजाजी नेशनल पार्क और नन्दा देवी नेशनल पार्क का रूख भी करते हैं। इसके साथ ही साहसिक गतिविधियों के लिए राफ्टिंग, स्कीइंग, पर्वतारोहण आदि के लिए हर साल लाखों के संख्या में पर्यटक उत्तराखण्ड पहुँचते है। लेकिन कोरोना के कारण गतिविधियाँ बन्द होने के कारण प्रदेश की लाइफलाइन कहाँ जाने वाला पर्यटन ठप पडा है।

वर्ष 2019 में करीब 4 करोड पर्यटक उत्तराखण्ड आये। उत्तराखण्ड में पर्यटन की ना सिर्फ अपार सम्भावनाएं है बल्कि वर्तमान समय में बहुत ऐसे पर्यटन स्थल है, जहाँ बीते सालों में रोजाना हजरों की संख्या में पर्यटक पहुँचते है। साल 2018 की बात की जाय तो यह आँकडा साढ़े तीन करोड़ से अधिक तक चला गया। हालांकि वर्ष 2019 में यह आकड़ा 3 करोड़ 82 लाख तक छू लिया था यही नही हर साल चारधाम की यात्रा में भी लाखों श्रद्धालु उत्तराखण्ड आये है। इसके बजह से ही उत्तराखण्ड के लाखों परिवारों की रोजी–रोटी जूडी हुई है लेकिन वर्ष 2013 की आपदा व 2020 का कोविड– 19 की वैश्विक महामारी उत्तराखण्ड पर्यटन व्यवसाय पूरी तरह से चौपट हो गया है।

उत्तराखण्ड में कोरोना महामारी के कारण इस वर्ष भी पर्यटन कारोबार भी बन्द पड़ी हैं जिससे पर्यटन व्यवसाय से जुडे करोबारी लगातार सरकार से राहत की मांग कर रहे है। हालांकि पिछले साल सरकार की ओर से आर्थिक सहायता और लाइसेस नवीनीकरणख बिजली बिलों के भुगतान में छूट दी गयी थी ऐसे में इस वर्ष भी इन कारोबारियों को सब्सिडी दिये जाने के लिए पर्यटन विभाग ने सोच–विचार करना प्रारम्भ कर दिया है। वहीं पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज का वक्तव्य है कि व्यवसायियों को राहत देने के लिए विचार विमर्श किया जा रहा है।

पर्यटन का उत्तराखण्ड में भ्रमण वर्तमान समय में–

वर्ष	पर्यटक आये
2020	67387 (चार धाम यात्रा को छोड़कर)
2020	3,21,906 (चार धाम यात्रा के लिए पहुँचे)
2020	7726 यमुनोत्री
2020	23774 गंगोत्री
2020	135349 केदारनाथ
2020	155055 बद्रीनाथ
2021	1 जनवरी से 25 मई 2021 तक 10625 पर्यटक उत्तराखण्ड पहुँचे

1 जनवरी से 25 मई 2021 तक 10625 पर्यटक उत्तराखण्ड पहुँचे

स्थितियाँ सामान्य होते ही शुरू होगी पर्यटन गतिविधियाँ–

उत्तराखण्ड पहुँचने वाले पर्यटकों की संख्या

वर्ष	कुल पर्यटक	भारतीय पर्यटक	विदेशी पर्यटक
2014	23630045	22520097	109948
2015	29400246	29295152	111094
2016	31770561	31663762	112799
2017	34723199	34581007	142102
2018	36852204	36697678	154526
2019	39225740	देश विदेश से	उत्तराखण्ड पहुँचे
2020	वे तमाम हिस्से से	392225740	उत्तराखण्ड पहुँचे
2021	25 मई तक प्रदेश में 10625	पर्यटक ही उत्तराखण्ड पहुँचे	

पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज जी का कहना है कि पर्यटन व्यवसाय पूरी तरिके से ठप है ऐसे में पर्यटन क्षेत्र से जुड़े हुए व्यापारियोंकी चिन्ता करते हुए दो दौर की बैठक हो चुकी है। इन बैठकों में लिए गये है, जिन्हे मुख्यमन्त्री के समक्ष प्रस्तुत होगा। जिस तरह से उत्तराखण्ड सरकार ने पिछले इन व्यापारियों की सहायता की थी इस वर्ष भी उन व्यापारियों की सहायता की जायेगी। साथ ही इस बात पर जोर दिया जायेगा की वर्तमान समय थोडी परिस्थितियाँ थोडी अपोजिट है। लेकिन आशा है कि जैसे ही स्थितियाँ सामान्य होगी वैसे ही पर्यटन गतिविधियाँ धीरे–2 चलना शुरू हो जायेगी। 10 वही ई० टीवी० भारत से वार्ता के दौरान उत्तराखण्ड होटल एसोसिएशन के अध्यक्ष संदीप साहनी ने बताया कि पिछले वर्ष भी पर्यटन गतिविधियाँ पूरी तरह से ठप रही है। इस वर्ष भी पर्यटन गतिविधियाँ पूरी तरह से बन्द है,

इसके वजह से ना केवल होटल व्यवसाय से जुड़े कारोबारी, बल्कि टैक्सी संचालकों समेत अन्य

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

छोटे– मोटे व्यापारियों को काफी बड़ा नुकसान उठाना पड़ रहा है। लेकिन अभी तक राज्य सरकार इस पर कोई निर्णय नहीं ले पायी है जैसे कि लाखों परिवारों की रोजी–रोटी पर्यटन गतिविधियों पर अटकी हुई है। ऐसे में इन सभी को अपना घर चलाने के लिए सरकार के सहायता की जरूरत है।

निम्नलिखित आकड़ो को देखने के बाद यह प्रतीत होता है कि 2014 से 2019 तक चाहे भारतीय पर्यटक हो या विदेशी पर्यटक हो लगातार पर्यटाकों की संख्या में वृद्धि हुई हैं किन्तु 2020 व 2021 में कोरोना महामारी ने देश व राज्य की पूरी अर्थव्यवस्था बिगाड़ कर रख दी।

अगर देखा जाय तो किसी देश व राज्य के विकास के लिए पर्यटन व्यवसाय एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अगर उत्तराखण्ड पर्यटन के इतिहास की बात की जाय तो वह बहुत पुराना है। किन्तु आज के पर्यटन की बात की जाय तो और भी व्यापक एवं समृद्ध हो गया है। पर्यटन का इतिहास कल भी था आज भी है आनें वाले समय में भी रहेगा। वर्ष 2013. उत्तराखण्ड आपदा के कारण पर्यटकों का ग्राफ तेजी से गिरा। इसके बाद अगले सालों में पर्यटकों की आवाजाही बढने लगी, और हर साल बढ़ती ही जा रही है। यह आकड़ा उत्तराखण्ड राज्य में पर्यटकों की सम्भावनाओं को दिखाता है जिससे उत्तराखण्ड राज्य सरकार के आय का बड़ा साधन बनता जा रहा है और पर्यटन व्यवसाय से जुड़े लोगों के जीवन यापन का प्रमुख साधन भी बनता जा रहा है।

अगर सरकार ठोस राजनीति बनाकर कर आधारभूत संरचना में आवश्यक सुधार करें, साथ ही पर्यटन से जुडी चुनौतिया व समस्याओं को सुलझाने का भरपुर प्रयास करें तो पर्यटन राज्य की अर्थव्यवस्था को विकास का मजबूत स्तम्भ बन सकता है। पर्यटन क्षेत्र भरपूर राजेगार मुहैया कराकर पलायन जैसे समस्या को दूर करने में कारगर होगी। अब आवश्यकता है सरकार की मजबूत इच्छा शक्ति के साथ उठाये गये ठोस कदमों की उत्तराखण्ड में पर्यटक की आज व्यापक सम्भावनाएं है, आने वाले समय में भी सम्भावना रहेगी। मगर इसके लिए योजना बद्ध ढंग से मजबूती के साथ कदम उठाने की जरूरत है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुरुक्षेत्र मई 2008.
2. कुरुक्षेत्र जून 2005 पृ० सं० 32.
3. इन्टनेट से स्वयं द्वारा।
4. मेरी संगिनी अप्रैल 2008 पृ० सं0 70.
5 सोरघाटी पिथोरागढ वर्तमान अतीत (इण्टरनेट द्वारा)।
6. उत्तराखण्ड पर्यटन नीति 2018.
7. कुरुक्षेत्र 2005 पृ० सं० 38.
8. उत्तराखण्ड अर्थ एवं साख्यिकीय निदेशालय
9. उत्तराखण्ड पर्यटन विकास परिषद।
10. http://www-alcte&india-org-downloads / ancient-pdf- Retrievaon april9-2015.
11. उत्तराखण्ड अर्थ एवं साख्यिकीय निदेशालय
12. इन्टरनेट द्वारा स्वयं।
13. योजना 15 मई 2010 पृ०सं० 24.

*****